

प्रेषक,

जनपद मध्यावन,  
प्रमुख सचिव,  
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

मेलाधिकारी,  
हरिद्वार।

शहरी विकास अनुभाग-1

देहरादून : दिनांक : 06 जनवरी, 2010

विषय: आगामी कुम्भ मेला, 2010 के अन्तर्गत Construction of temporary 11 K.V. line, 11.04 K.V. S/S, L.T. Line, Providing street light & other petty expenditure of Kumbh Mela in Haridwar कार्य हेतु द्वितीय एवं अन्तिम किस्त की धनराशि के व्यय की स्वीकृति के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक शासनादेश संख्या 704/IV(1)/2009-06(कुम्भ)/2009 दिनांक 10.08.2009 का संदर्भ ग्रहण करें, जिसके द्वारा अधिशासी अभियंता, विद्युत वितरण खण्ड, अधिकांश द्वारा उक्त कार्य हेतु प्रस्तुत आगमन रु. 296.40 लाख के सापेक्ष तकनीकी परीक्षणोपरान्त संस्तुत रु. 253.04 लाख की प्रशासकीय स्वीकृति देते हुए, रु. 125.00 लाख की धनराशि को व्यय किए जाने हेतु स्वीकृति प्रदान की गयी है। तत्क्रम में आपके पत्र संख्या 3112/कु.मे./उपयोगिता, दिनांक 28.11.2009, जिसके द्वारा उक्त रु. 125.00 लाख में से रु. 108.00 लाख का उपयोगिता प्रमाण पत्र शासन को उपलब्ध कराया गया है, की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल, उक्त कार्य हेतु संस्तुति के सापेक्ष स्वीकृति हेतु अवशेष रु. 128.04 लाख (रु. एक करोड़ अठ्ठाईस लाख चार हजार मात्र) की धनराशि को वित्तीय वर्ष 2009-10 में व्यय किए जाने की निम्नलिखित शर्तों एवं प्रतिबन्धों के साथ सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं :-

1. स्वीकृत की जा रही धनराशि का चार बराबर किस्तों में आहरण किया जाएगा और पूर्व आहरित धनराशि के सापेक्ष 80 प्रतिशत से अधिक उपयोग के आद ही इस स्वीकृति के अधीन किसी धनराशि का कोषागार से आहरण किया जाएगा।
2. उक्त तृतीय किस्त के विपरीत न्यूनतम निविदा (एल-1) के परिपदृश्य में व्यय हेतु न्यूनतम धनराशि का ही कोषागार से आहरण किया जायेगा। आहरित से धनराशि के सापेक्ष यदि कोई बचत होती है तो उसे तत्काल राजकोष में जमा किया जाएगा।
3. उक्त कार्य इसी धनराशि से पूर्ण किया जायेगा और आगमन का पुनरीक्षण किसी भी दशा में अनुमत्त न होगा।
4. योजनान्तर्गत प्रस्तावित कार्यों का निकटता से पर्यवेक्षण किया जाए। इसके लिए यथाआवश्यकता, निगरानी समिति का गठन कर लिया जाए।
5. कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व शासनादेश संख्या 475/XXVII(7)/2008 दिनांक 15 दिसम्बर, 2008 की व्यवस्थानुसार निर्धारित प्रारूप पर अनुबन्ध निष्पादन की कार्यवाही सुनिश्चित कर ली जाएगी।
6. स्वीकृत की जा रही धनराशि का दिनांक 31.3.2010 तक उपयोग करके कार्य की वित्तीय/भौतिक प्रगति का विवरण तथा उपयोगिता प्रमाणपत्र शासन को प्रस्तुत कर दिया जाएगा।
7. कार्य की गुणवत्ता एवं समयबद्धता के लिए संबंधित अधिशासी अभियंता/मेलाधिकारी पूर्ण रूप से उत्तरदायी होंगे।
8. उक्त धनराशि का आहरण मेलाधिकारी, हरिद्वार के आहरण वितरण कोड से किया जाएगा।

9 शोध शर्तें एवं प्रतिबन्ध उक्त शासनादेश दिनांक 10.06.2009 के अनुसार शथावत लागू रहेंगे।

2- इस संबन्ध में होने वाला व्यय शासनादेश संख्या 1614/IV(1)/2009-39 (सा.)/2006-टीसी दिनांक 24 नवम्बर, 2009 के द्वारा मेलाधिकारी के निवर्तन पर रखी गई धनराशि रु. 100.00 करोड़ के सापेक्ष अहरित कर किया जाएगा तथा पुरतांकन तद्स्थान में वर्णित लेखाशीर्षक में किया जाएगा।

3- यह आदेश वित्त विभाग के असा.सं. 881/XXVII(2)/2009 दिनांक 01 जनवरी, 2010 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय,

(अनूप वधावन)  
प्रमुख सचिव।

संख्या : 1759 (1)/IV(1)/2009 तद्दिनांक।

प्रतिनिधि : निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. निजी सचिव, मा. मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड।
2. निजी सचिव, मा. शहरी विकास मंत्री जी, उत्तराखण्ड।
3. महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी प्रथम), उत्तराखण्ड, देहरादून।
4. महालेखाकार (ऑडिट), उत्तराखण्ड, देहरादून।
5. स्टाफ ऑफिसर, मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन।
6. आयुक्त, गढ़वाल नग्डल, पौड़ी।
7. जिलाधिकारी, देहरादून।
8. परिणत कोषाधिकारी, हरिद्वार।
9. वित्त अनुभाग-2/वित्त नियोजन प्रकोष्ठ, बजट अनुभाग, उत्तराखण्ड शासन।
10. निदेशक, एन.आई.सी., सचिवालय परिसर, देहरादून, को इस अनुरोध के साथ कि नगर विकास को जी.ओ. में इसे शामिल करें।
11. अधिशासी अभियंता, विद्युत वितरण खण्ड, ऋषिकेश।
12. गार्ड फ़ाइल।

आज्ञा से,

(अनूप वधावन)  
प्रमुख सचिव।